ECONOMICS TIMES N.D 2/1/19

रबड़ और कॉफी की चाल धीमी, तेज रहेगा जीरा, हल्दी का बाजार

मॉनसून में मूसलाधार बारिश के चलते रबड़ और कॉफी की पैदावार घटेगी, मिर्च के उत्पादन में मामूली बढ़ोतरी

कृष्ण कुमार | कोच्चि

रबड़, कॉफी और काली मिर्च जैसी नकदी फसलों की पैदावार के लिहाज से 2019 निराश करनेवाला साल रह सकता है। इस साल इन फसलों के मुकाबले मिर्च, जीरा और हल्दी जैसे मसालों के उत्पादन और निर्यात में बढ़ोतरी हो सकती है। रबड़ का प्रॉडक्शन 2018-19 में रबड़ बोर्ड की तरफ से तय 6 लाख टन के रिवाइज्ड टारगेट से भी कम रह सकता है। हर पेड़ से मिलनेवाले लेटेक्स की मात्रा गरमी का कमजोर सीजन शुरू होने से पहले ही घट गई है। इसकी वजह मॉनसून सीजन में हुई मूसलाधार बारिश बताई जा रही है। 2019 में ओवरसप्लाई के चलते इंटरनेशनल मार्केट में रबड़ का दाम कमजोर रहने का अनुमान लगाया जा रहा है।

इस बाबत जियोजित कॉमट्रेड की रिसर्च एनालिस्ट अनु पई कहती हैं, 'रबड़ के दाम में तेजी इसके सबसे बड़े कंज्यूमर चीन की तरफ से होनेवाली खरीदारी, अमेरिका के साथ उसके ट्रेड वॉर की स्थिति, क्रूड के दाम की स्थिति और थाईलैंड, इंडोनेशिया और मलेशिया के त्रिपक्षीय परिषद के प्रॉडक्शन में कटौती के फैसले पर निर्भर करेगी।' कॉफी उत्पादकों का कहना है कि प्लांट्स में पिछले साल हुई भारी बारिश के चलते पौधों को बड़ा नुकसान हुआ था। कर्नाटक प्लांटर्स एसोसिएशन के चेयरमैन एम बी गणपति ने कहा, 'ऐसा लगता है कि 2019 भी कॉफी उत्पादन के लिए बुरा साल रह सकता है। सूखे के चलते पिछले दो साल से इसका उत्पादन घटा हुआ है।'

उनके हिसाब से इस साल कॉफी का उत्पादन तीन लाख टन रह सकता है। 2017-18 में कॉफी का उत्पादन 3.16 लाख टन रहा था। इधर, दुनिया के सबसे बड़े प्रोड्यूसर ब्राजील में बंपर फसल होने से ग्लोबल मार्केट में कॉफी का दाम टूट गया है।

दुनिया का सबसे बड़ा मिर्च उत्पादक और निर्यातक देश भारत पैदावार अनुमान के मुताबिक रहने पर बाजार में अपना दबदबा बढ़ाने की कोशिश करेगा। विजयकृष्ण स्पाइस फार्म्स के एमडी रविपति पेरैया कहते हैं, 'बुआई रकबे में 20% की बढ़ोतरी हुई है। लेकिन मॉनसून सीजन में आंध्र प्रदेश और तेलंगाना के कुछ इलाकों में बारिश काफी कम होने के चलते पैदावार सीमित रह सकती है। उत्पादन में मामूली बढ़ोतरी होने की भी संभावना है।' मिर्च के दाम में स्थिरता रह सकती है। पिछले दो साल से हर साल 23 से 24 लाख टन मिर्च की पैदावार हो रही है। 2019 में जीरे की भी बंपर पैदावार होने की उम्मीद की जा रही है। सबसे ज्यादा निर्यात होनेवाले मसालों में जीरे का नंबर दूसरा है।

ऑल इंडिया स्पाइसेज एक्सपोर्टर्स फोरम के चेयरमैन राजीव पलीचा के मुताबिक, 'अन्य निर्यातक देशों में राजनीतिक उथल पुथल के चलते भारत ग्लोबल मार्केट में जीरे का बड़ा सप्लायर बना रह सकता है।'उन्होंने कहा कि सिंचाई की सुविधा बेहतर रहने और मौसम ठंडा रहने से जीरे की अच्छी फसल मिल सकती है।

- **रबड़ का** प्रॉडक्शन 2018-19 में रबड़ बोर्ड की तरफ से तय 6 लाख टन के रिवाइज्ड टारगेट से भी कम रह सकता है
- **मॉनसून में** अधिक बारिश के चलते गरमी शुरू होने से पहले ही घट गई है हर पेड़ से मिलने वाले लेटेक्स की मात्रा
- **दुनिया के** सबसे बड़े प्रोड्यूसर ब्राजील में कॉफी की बंपर फसल होने से ग्लोबल मार्केट में दाम में तेज गिरावट आई है
- **अन्य निर्यातक** देशों में राजनीतिक उथल-पुथल के चलते ग्लोबल मार्केट में जीरे का बड़ा सप्लायर बना रह सकता है भारत